भारतेन्दु युग में ही हिन्दी उपन्यास-लेखन की परम्परा का श्रीगणेश हुआ। तब से बराबर उन्नति करती हुई उपन्यास विधा समकालीन हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण गद्य-विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। भारतेन्दु से लेकर आज तक के हिन्दी उपन्यास के समूचे विकास को विवेचन की सुविधा के लिए निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत रखा जाता है :

Scanned by CamScanner

1) आरंभिक हिन्दी उपन्यास या प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास

2) प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास,

3) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास,

4) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास,

5) समकालीन हिन्दी उपन्यास

20.6.1 आरंभिक हिन्दी उपन्यास

आरंभिक हिन्दी उपन्यास या प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास का समय सन् 1877 से 1918 ई० तक माना जा सकता है। सन् 1877 में श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक सामाजिक उपन्यास लिखा था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस उपन्यास की काफी प्रशंसा की है। यह भले ही अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास न हो किन्तु विषयवस्तु की नवीनता के आधार पर इसे हिन्दी का प्रथम आधुनिक उपन्यास कहा जाता है। इसमें तत्कालीन हिन्दू समाज की अनेक कुरीतियों का आलोचनात्मक एवं यथार्थवादी रीति से चित्रण हुआ है और स्त्रियों के लिए अनेक सदुपदेश दिए गए हैं। 1918 ई० में प्रेमचंद का 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। यहीं से हिन्दी उपन्यास की दिशा और गति में ऐसा परिवर्तन आ जाता है कि प्रेमचंद और उनके समय के उपन्यासों को प्रेमचंद-पूर्व उपन्यासों से अलग करके समझना आवश्यक हो जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में लिखी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों को कथात्मकता के बावजूद उपन्यास की कोटि में नहीं रखा जा सकता है। पं० गौरीदत्त की रचना 'देवरानी-जेठानी' भी एक शिक्षा-प्रधान उपदेशात्मक रचना है। दरअसल लाला श्रीनिवास दास का अंग्रेजी ढंग का नावेल 'परीक्षा गुरु' और श्रद्धाराम फुल्लौरी का 'भाग्यवती' ही हिन्दी के अभिन्न उपन्यासों के रूप में रेखांकित किये जा सकते हैं। 'भाग्यवती' की रचना सन् 1877 में और 'परीक्षा गुरु' का प्रकाशन सन् 1882 में हुआ था। 'भाग्यवती' उपन्यास का प्रकाशन उसके रचना-काल के दस वर्ष बाद सन् 1887 में हुआ।

प्रेमचंद के पूर्व लिखे गये मौलिक उपन्यासों को हम पाँच श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं - 1. सामाजिक उपन्यास, 2. ऐयारी-तिलिस्मी उपन्यास, 3. जासूसी उपन्यास, 4. ऐतिहासिक उपन्यास, 5. भावप्रधान उपन्यास।

सामाजिक उपन्यास

विवेच्य काल राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना की दृष्टि से जागृति एवं सुधार का काल रहा है। सामाजिक समस्याओं और परिस्थितियों को केन्द्र में रखकर साहित्य रचना करने वाले दो प्रकार के साहित्यकार थे - एक वर्ग तो नवीन शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, सुधार-आन्दोलन के प्रकाश में धार्मिक बाह्याडम्बरों एवं सामाजिक विकृतियों को समाप्त करके अपनी प्राचीन संस्कृति की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता था, दूसरे वर्ग का लेखक सनातनी परम्परा से जुड़ा हुआ था। वह आर्य समाज आदि के द्वारा किये जाने वाले सुधारों का विरोधी था। पहले वर्ग के लेखकों में श्रद्धाराम फुल्लौरी, लाला श्रीनिवास दास, बालकृष्ण भट्ट तथा तज्जाराम मेहता और दूसरे वर्ग के लेखकों में गोपालराम गहमरी और किशोरी लाल गोस्वामी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन दोनों वर्गों के लेखकों ने अधिकतर नीति-उपदेश-प्रधान उपन्यासों की ही रचना की। इनके उपन्यासों के विषय हैं - आदर्श विद्यार्थी, आदर्श हिन्दू, आदर्श गृहिणी, चरित्र-बल, सत्य-निष्ठा आदि का महत्व तथा जुआ, मद्यपान, कुसंगति आदि से होने वाली हानियाँ और उनका निवारण। लाला श्रीनिवास दास (परीक्षा गुरु), बालकृष्ण भट्ट (नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान), लोचनप्रसाद पाण्डेय (दो मित्र), तज्जाराम शर्मा (आदर्श दम्पत्ति, बिगड़े का सुधार), गोपालराम गहमरी (नये बाबू, डबल बीबी, सास-पतोहू) आदि के उपन्यास उपर्युक्त प्रवृत्तियों की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं।

इन सामाजिक उपन्यासों के बीच प्रेम-रोमांस वाले ऐसे उपन्यासों की भी रचना हुई है जिनमें रीतिकालीन नायिका-भेद वाले विलासात्मक प्रेम को प्रधानता दी गई है, कुछ उपन्यासों में उर्दू-उपन्यासों की शोखी, शरारत और चुहल भी दिखाई पड़ती है। 'अँगूठी का नगीना' (किशोरी लाल गोस्वामी), 'प्रणयी माधव'

Scanned by CamScanner

(मोटेश्वर पोतदार), 'शीला' (हरिप्रसाद जिंजल), 'श्यामा स्वप्न' (ठाकुर जगमोहन सिंह) आदि प्रेम-प्रधान उपन्यास हैं।

इस युग के सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं किशोरीलाल गोस्वामी, जिन्होंने लगभग 65 उपन्यासों की रचना की है। इनके विचार सनातन हिन्दू धर्म के अनुकूल हैं। इनके सामाजिक उपन्यासों में 'त्रिवेणी व सौभाग्य श्रेणी', 'लीलावती व आदर्श सती', 'राजकुमारी', 'चपला व नव्य समाज' आदि उल्लेखनीय हैं। गोस्वामी.जी के प्राय: सभी उपन्यास स्त्रीपात्र-प्रधान हैं और उनमें प्रेम के विविध रूपों का चित्रण हुआ है। उन्होंने यदि एक ओर सती-साध्वी देवियों के आदर्श प्रेम का चित्रण किया है तो दूसरी ओर साली-बहनोई के अवैध-प्रेम, विधवाओं के व्यभिचार, वेश्यायों के कुत्सित जीवन आदि का भी सजीव वर्णन किया है। बनते हुए नये समाज को इन्होंने संदेह की नजर से देखा है।

तिलस्मी-ऐयारी उपन्यास

हिन्दी उपन्यास युग-जीवन के चित्रण की जिस प्रवृत्ति को लेकर आरम्भ हुआ था यदि परवर्ती लेखकों ने उस परम्परा का अनुगमन किया होता तो यथार्थपरक समाज-चित्रण की कला प्रेमचंद के पहले ही प्रौढ़ता प्राप्त कर लेती, किन्तु देवकीनन्दन खत्री के 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास के प्रकाश में आते ही चमत्कारपूर्ण घटना-प्रधान उपन्यासों की ऐसी धूम मची कि कुछ काल के लिए सामाजिक यथार्थ का चित्रण करने वाली प्रवृत्ति की गति मन्द पड़ गयी।

देवकीनन्दन खत्री पर उर्दू की दास्तान-परम्परा का प्रभाव है। उन्होंने 'तिलस्में होशरूबा' से लेकर 'चन्द्रकान्ता', 'चन्द्रकान्ता संतति', 'भूतनाथ', 'नरेन्द्र मोहिनी', 'वीरेन्द्र वीर', 'कुसुम कुमारी' जैसे रहस्य-रोमांच से परिपूर्ण उपन्यासों की रचना की और हिन्दी में एक नया पाठक-समाज तैयार किया - ऐसा पाठक-समाज भी बनाया जो हिन्दी नहीं जानता था। उनके उपन्यासों को पढ़ने के लिए असंख्य लोगों ने हिन्दी सीखी और देवनागरी लिपि का ज्ञान प्राप्त किया। खत्री जी के उपन्यासों का संसार तिलस्मी एवं ऐयारी से भरपूर उर्दू दास्तानों और प्राचीन भारतीय कथाओं के राजकुमार-राजकुमारियों की प्रेम-कथाओं से निर्मित ऐसा संसार है जिसमें सब कुछ अतार्किक, जादुई और चमत्कारपूर्ण है।

ऐयार अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है तीव्रगामी या चपल व्यक्ति। देवकीनन्दन खत्री के अनुसार 'ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो। शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य कार्य है।' खत्री जी के उपन्यासों में इन्हीं ऐयारों की करामात का रहस्य-रोमांच भरा ऐसा आख्यान है जिसको पढ़ने वाला व्यक्ति आत्म-विस्मृति की हद पर पहुँचकर इतने मनोरंजनपूर्ण संसार में लीन हो जाता है कि वहाँ से निकलना उसे प्रीतिकर नहीं लगता। माताप्रसाद गुप्त के अनुसार अतिप्राकृत भावना के आधार पर लिखे गये इन उपन्यासों की लोकप्रियता के लिए मध्ययुगीन विकृत रुचि ही उत्तरदायी है। जो भी हो, इतना अवश्य है कि हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में इन रचनाओं का बहुत बड़ा योगदान है।

खत्री के अतिरिक्त हरेकृष्ण जौहर ने 'कुसुमलता', 'भयानक भ्रम', 'नारी पिशाच', 'मयंक मोहिनी या माया महल', 'भयानक खून' आदि ऐयारी उपन्यासों की रचना की। किशोरी लाल गोस्वामी ने भी 'शीशमहल' नामक उपन्यास लिखा। इन लेखकों को खत्री जैसी लोकप्रियता नहीं मिली।

जासूसी उपन्यास

तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों की लोकप्रियता ने गोपाल राम गहमरी को भिन्न ढंग से प्रसिद्ध होने के लिए जासूसी उपन्यासों की रचना में प्रवृत्त होने का अवसर प्रदान किया। जासूसी उपन्यास पूर्णत: योरोप-विशेषत: इंगलैंड की देन है। उन्नीसवीं शती में सर आर्थर कानन डायल के जासूसी उपन्यास बहुत लोकप्रिय हुए थे। उनके प्रभावस्वरूप बंगला में और बाद में हिन्दी में जासूसी उपन्यास लिखे गये। गोपाल राम गहमरी ने सन् 1900 ई० में 'जासूस' नामक मासिक पत्र निकाला। इसी में इनके जासूसी उपन्यास प्रकाशित हुए जिनकी संख्या लगभग 200 है। 'अद्भुत लाश', 'गुप्तचर', बेकसूर को फाँसी', 'खूनी कौन', बेगुनाह का खून', 'जासूस की चोरी', 'अद्भुत खून', 'डाके पर डाका', 'जादूगरनी मनोला', 'खूनी का भेद', 'खूनी की खोज', 'किले में खून' आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं जिनमें चोरी, डकैती, हत्या, ठगी

Scanned by CamScanner

आदि से संबंधित कोई भयंकर काण्ड हो जाता है और जासूस उसके सुराग में लग जाता है। फिर क्रमश: कथानक एक रहस्य से दूसरे रहस्य में उलझता हुआ घटनाओं के वातचक्र में तब तक फँसा रहता है जब तक जासूस अपने धैर्य, साहस, बल, बुद्धि और कौशल से उसका रहस्य-भेदन नहीं कर लेता। जासूसी उपन्यास की घटनाएँ जीवन की यथार्थ स्थिति के निकट होती हैं। कल्पना से उनमें रहस्य की सृष्टि होती है और इस तरह कथानक जटिल और पेचीदा हो जाता है। इस तरह के उपन्यासों में भी मनोरंजन, कुतूहल, कौतुक का समावेश रहता है किन्तु सत्य का उद्घाटन नैतिकता का स्थापन और आदर्शवादी दृष्टि का पोषण भी इनका उद्देश्य रहा है।

गोपालराम गहमरी के अतिरिक्त रामलाल वर्मा (चालाक चोर), किशोरीलाल गोस्वामी (जिन्दे की लाश), जयराम दास गुप्त (लंगड़ा खूनी) ने भी जासूसी उपन्यासों की रचना की किन्तु गहमरी के अतिरिक्त किसी को विशेष ख्याति नहीं मिली।

ऐतिहासिक उपन्यास

इस युग में मध्यकालीन भारत के मुगल शासन से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर अनेक उपन्यास लिखे गये। किशोरीलाल गोस्वामी ने ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना में विशेष रुचि दिखाई है। 'तारा वा क्षात्रकुल कमलिनी', 'कनक कुसुम वा मस्तानी', 'सुल्ताना रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल', 'लखनऊ की कब्र या शाही महलसरा', 'सोना, सुगन्ध वा पन्नाबाई', आदि उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास हैं। इनके अतिरिक्त गंगा प्रसाद (नूरजहाँ, वीर पत्नी, कुमार सिंह सेनापति, हम्मीर) जयरामदास गुप्त (काश्मीर पतन, रंग में भंग, मायारानी, नवाबी परिस्तान व वाजिद अली शाह, मल्का चाँद बीबी), मथुरा प्रसाद शर्मा (नूरजहाँ बेगम), ब्रजनन्दन सहाय (लाल चीन) आदि ने भी ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। इन उपन्यासों में यद्यपि ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं का चित्रण हुआ है, किन्तु इन्हें सच्चे अर्थों में ऐतिहासिक उपन्यास नहीं कहा जा सकता हैं क्योंकि एक तो इनमें ऐतिहासिक वातावरण का अभाव है, दूसरे ऐतिहासिक घटनाओं और तत्कालीन रीति-नीति, आचार-विचार वेश-भूषा आदि के वर्णन में कालदोष विद्यमान है। दरअसल लेखकों की प्रवृत्ति इतिहास की ओर से हटकर प्रणय-कथाओं, विलास-लीलाओं, रहस्यमय प्रसंगों और कुतूहलपूर्ण घटनाओं की कल्पना में अधिक लीन रही है। उन्होंने ऐतिहासिक छानबीन कम की, कल्पना से अधिक काम लिया है ऐसा प्रतीत होता है कि तिलिस्मी-ऐयारी और जासूसी उपन्यासों के अतिशय रहस्य-रोमांच के समानान्तर अपनी प्रेमकथाओं को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए इन रचनाकारों ने इतिहास का सहारा ले लिया। इन्हें ऐतिहासिक रोमांस की कथाएँ कहना अधिक समीचीन है।

भावप्रधान उपन्यास

इस युग में कुछ ऐसे भी उपन्यास लिखे गए जिनमें न घटना की प्रधानता है, न चरित्र की। इनमें भावतत्व की प्रधानता है जैसे ठाकुर जगमोहन सिंह का 'श्यामा-स्वप्न', ब्रजनन्दन सहाय के 'सौन्दर्योपासक', 'राधाकांत', 'राजेन्द्र मालती', आदि उपन्यास। इन उपन्यासों में कथा-तत्व सर्वथा क्षीण है। आचार्य शुक्ल ने इन्हें 'काव्यकोटि में आने वाले भावप्रधान उपन्यास' कहा है। घटना-परिस्थिति की क्षीणता के कारण इन उपन्यासों में कोई गति भी प्राय: नहीं है।

Scanned by CamScanner